सकालचे भजन

गणाधीश जो ईश सर्वा गुणांचा । मुळारंभ आरंभ तो निर्गुणाचा ।
नमो शारदा मूळ चत्वारि वाचा। गमो पंथ आनंत या राघवाचा ।।1।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।2।।
श्रूयतां देव देवेश नारायण जगत्पते।
तवदीयनामध्यानेन कथयिष्ये शुभाः कथाः।।3।।
ब्रह्मांनंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्।
द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ।।4।।

(2)

सद्गुरूनाथ माझे आई। मला ठाव द्यावा पायीं। (2 वेळ)
मला ठाव द्यावा पायीं । (2 वेळ)
सद्गुरूनाथ माझे आई। मला ठाव द्यावा पायीं (2 वेळ)

सुबह के भजन

जो ईश्वर समस्त गुणों का तथा निर्गुण का भी आरंभ है उस गजानन को और चारों वाणियों की मूल शारदा को मैं नमस्कार करता हूँ, जिससे राघवके अनंत पथका मुझे बोध हो जाय ।।1।।

नारायण और मनुष्यों में श्रेष्ठ 'नर' तथा सरस्वती देवी और महर्षि व्यास को नमस्कार कर महाभारत का पठन करना ।।2।।

हे जगत्पते देवदेवेश नारायण, आपका नाम स्मरण करके कल्याणकारी कथाएँ कहता हूँ, उन्हें आप सुने ।।3।।

जो ब्रह्मानंद में निमग्न है, जो परम सुखदाता है, जो केवल ज्ञान की मूर्ति है, जो द्वन्द्वातीत, गगन-सदृश और तत्त्वमसि इत्यादि महावाक्यों से लक्षित किया गया है, जो एक, नित्य, विमल, अचल, सर्वज्ञ, साक्षिभूत, भावातीत और त्रिगुणरहित है, ऐसे सद्गुरूको मैं नमस्कार करता हूँ ।।4।।

(2)

हे सद्गुरूनाथ, आप मेरी माँ हो, मुझे अपने चरणों में आश्रय दीजिये।

(3)

पहिले पाहतां श्रीमुख। तहान हरपली भूक ।।1।।
पहा पहा डोलेभरी। मूर्ति सांवळी गोजिरी ।।2।।
रवि शशि जयाच्या कळा। तो हा मदनाचा पुतळा।।3।।
तुका म्हणे वर्णू काय। धेतो अलाया बलाया ।।4।।

(4)

वामसव्य दोहीकडे। दिसे देवाचे रूपडे।।1।।
खालीं पाहे अथवा वरी जिकडे पहावें तिकडे हरी ।।2।।
डोळे झांकुनिया पाहे। पुढे गोपाळ उभा आहे ।।3।।
अणु रेणु चक्रपाणी। खूण झाली दासी जनी ।।4।।

(5)

हडबडले पातक। रामनाम घेतां एक ।।1।।
नाम घेतां तत्क्षणीं। चित्रें ठेविली लेखणी ।।2।।
घेउनि पूजेचा संभार। ब्रह्मा येतसे सामोरा ।।3।।

(3)

पहले श्रीमुख देखते ही भूख और प्यास का हरण हो गया।।1।। सांवळी-सलोनी मूर्ति को नयनभर देखते रहो।।2।। सूर्य और चन्द्र जिनकी कला है, ऐसी यह मदनमूर्ति है।।3।। तुकाराम कहते हैं वह (मस्त हो कर) डोलता-झूमता है, मैं इसका वर्णन कैसे करूं।।4।।

(4)

वाम और सव्य दोनों ओर परमेश्वर का रूप दिखाई दे रहा है।।1।। नीचे देखो अथवा ऊपर, जहां देखो वहाँ हरि ही है।।2।। नेत्र बंद करके देखती हूँ तो सामने गोपाल खड़ा है।।3।।

(नामदेव की) दासी जनाबाई कहती है, मैं अणु-अणु में चक्रपाणि को देखती हूँ, अनुभव की यह खूण (निशानी) मुझे मिली है।।4।।

(5)

एक बार रामनाम लेते ही पाप हड़बड़ा गया ।।1।। जिस क्षण नाम लेते है उसी क्षण चित्रगुप्त (पाप-पुण्य की आयव्यय) लिखना बंद कर देता है।।2।। ब्रह्मदेव (भक्तों की पूजा करने के लिये) पूजा सामग्री लेकर सम्मुख आते हैं।।3।।

नामा म्हणे हें जरी लटकें। तरी छेदावें मस्तक ।।4।।

(6)

तिळाएवढे बांधुनि घर। आंत राहे विश्वंभर ।।1।।
तिळाइतुकें हें बिंदुलें । तेणें त्रिभुवन कोंदाटलें।।2।।
हरिहराच्या मूर्ती। बिंदुल्याँत येती जाती ।।3।।
तुका म्हणे हे बिंदुले। तेणे त्रिभुवन कोंदाटलें।।4।।

(7)

आनंदु रे आजि आनंदु रे। सबाह्य अभ्यंतरी
अवघा परमानंदु रे ।।1।। एक दोन तीन चार पांच सहा।
इतुके विचारूनि मग परमानंदी रहा।।2।। सातवा
राम आठवा वेळोवेळा। बापरखुमादेवीवरू विठ्ठल
जवळा ।।3।।

(8)

कृपाळू सज्जन तुम्ही संतजन। एवढे कृपादान द्यावे
मज ।।1।। आठवण तुम्हीं द्यावी पांडुरंगा । देवा माझी
सांगा काकुलती ।।2।। अनाथ अपराधी पतित आगळा।

नामदेव कहते हैं कि यदि यह मेरी वाणी असत्य हो तो मेरे मस्तक का छेदन कर देना ।।4।।

(6)

तिलके समान घर बनाकर उसमें विश्वव्यापी ईश्वर रहता है।।1।। तिल जितना यह बिन्दु त्रिभुवन में व्याप्त हो गया।।2।। तुकाराम कहते है हरि और हर की मूत्रियां इस बिन्दु में आती और जाती है।।3-4।।

(7)

आज आनंद ही आनंद हो गया, बाहर और अंतर में एक ही परमानंद है।।1।। एक, दो, तीन, चार, पांच या छः बार देखा तो भी (आनंद ही आनंद मिला) अब तो परमानंद में रहना है।।2।। सातवीं बार और (इससे भी अधिक) बारंबार रामका ध्यान करो। बापरखुमादेवीवर (ज्ञानेश्वर) कहते हैं कि विठ्ठल तो समीप ही है।।3।।

(8)

आप संतजन कृपालु हो मुझे यह कृपादान दें।।1।। मेरा स्मरण पांडुरंग को करा देना और उनको कहना कि मैं अत्यन्त व्याकुल हो गया हूँ।।2।। मैं सबसे बड़ा

परी पायांवेगला नका ठेंवू ।।3।। तुका म्हणे तुम्ही
निरविल्यावरी। मग मज हरी उपेक्षीना ।।4।।

(9)

नाम वाचे श्रवणी कीर्ति। पाउलें चित्तीं समान ।।1।।
काळ सार्थक केला त्यांनी । धरिला मनीं विठ्ठल ।।2।।
कीर्तनाचा समारंभ । निद्वन्द्व सर्वदा ।।3।।
निळा म्हणे स्वरूपसिद्धि। मुख्य समाधि हरिनाम ।।4।।

(10)

आम्ही वैकुण्ठवासी। आलों याचि कारणासी ।
बोलिले जे ऋषि । साच भावे बर्ताया ।।1।।
झाडूं संताचे मारग । आडरानी भरले जग ।
उच्छिष्टाचा भाग। शेष उरला तो सेवूं ।।2।।
अर्थे लोपलीं पुराणें। नाश केला शब्दज्ञानें।
विषयलोभीं मनें। साधनें बुडविली ।।3।।
पिटूं भक्तीचा डांगोरा। कळिकाळासी दरारा।
तुका म्हणे करा। जयजयकार आनंदे ।।4।।

पतित, अपराधी और अनाथ हूँ, किन्तु मुझे चरणों से दूर मत करना।।3।। तुकाराम कहते है कि इस पकार हरि के पास आप मध्यस्थ बनें तो वे मेरी उपेक्षा नहीं करेंगे।।4।।

(9)

जो विठ्ठल का मनमें ध्यान करके उसका नाम वाणी से बोलते है, उसकी कीर्ति श्रवण करते हैं और उसके (सम) चरण चित्त में रखते हैं, उन्होंने काल को सार्थक किया है ।।1-2।। कीर्तन मे सदैव समाँ बंधने से वे निर्द्वन्द्व हो जाते हैं।।3।। निळा कहते हैं कि हरि - नामयुक्त स्वरूपसिद्धि ही मुख्य समाधि है।।4।।

(10)

हमारा वास वैकुण्ठ में है, किन्तु आपके लिये यहाँ आये हैं, जिससे हम ऋषियों ने जैसा कहा उसी प्रकार सत्भाव से वर्तन करें।।1।। सब जग असन्मार्ग पर चल रहा है, हम तो जिस मार्ग से संत गये हैं उसी पर झाडू लगाकर उसे स्वच्छ रखेंगे और (उनके भोजन से) शेष रहा हुआ उच्छिष्ठ भाग सेवन करेंगे ।।2।। पुराणों में जो अर्थ है वह लुप्त हो गया (केवल) शब्द ज्ञान से नाश ही हुआ है, और मन विषयलोभी होने से (परमार्थ) साधन डूब गया ।।3।। तुकाराम कहते हैं कि भक्ति का ढिंढोरा पिटूंगा, जिससे कलिकाल डर जायगा और आनंद से जयजयकार हो जायेगी।